Tender Heart High School, Sector - 33 - B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 3 मातृभूमि का मान (एकांकी) लेखक - हरिकृष्ण प्रेमी

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या 28 पर दिए पाठ - 3 'मातृभूमि का मान' का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! आज हम 'मातृभूमि का मान' एकांकी को विस्तार से समझने जा रहे हैं इसलिए आप अपनी - अपनी पुस्तक निकाल लें साथ ही उत्तर - पुस्तिका भी निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के दौरान आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे और उन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आपको तीन मिनट दिए जाएँगे। प्रश्नों के उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप अपना ध्यान इस ओर ही केन्द्रित रखेंगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो! पिछले सप्ताह हमने इस एकांकी के दो दृश्यों को समझा था। आइए, उन दो दृश्यों के बारे में संक्षेप में जान लेते हैं। 'मातृभूमि का मान' एकांकी हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित है। यह चार दृश्यों में विभाजित एक देशभक्त, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय सम्मान, वीरता एवं पराक्रम के गुणों से सुसज्जित एकांकी है। एकांकी का आरंभ बूँदी नरेश

रावहेमू और मेवाड़ के सेनापति अभय सिंह के संवादों से होता है। अभय सिंह मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा का संदेश लेकर बूँदी नरेश राव हेमू के दरबार में आता है और कहता है कि बूँदी प्रदेश मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ले। बूँदी नरेश रावहेमू, महाराणा के इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहते हैं कि हाड़ा वंश किसी की गुलामी स्वीकार नहीं करेगा। वह विदेशी शक्ति हो या फिर मेवाड़। रावहेमू, महाराणा को हृदय में अहंकार न पालने को कहते हैं तथा महाराणा लाखा को अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध करने की चुनौती देते हैं।

अभय सिंह जब महाराणा को बूँदी नरेश राव हेमू का जवाब बताता है तो महाराणा बूँदी प्रदेश पर चढ़ाई करने की भीषण प्रतिज्ञा लेते हुए कहते हैं कि जब तक वे बूँदी प्रदेश में ससैन्य प्रवेश नहीं कर लेते, तब तक वे अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। तभी चारणी राजपूतों की एकता को बनाए रखने तथा इस एकता की माला को न तोड़ने का गीत गाते हुए दरबार में प्रवेश करती है। चारणी, महाराणा से युद्ध न करने की प्रार्थना करती है और उन्हें प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए एक नकली बूँदी गढ़ बनवाने एवं उस पर आक्रमण कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का सुझाव देती है। चारणी के सुझाव को स्वीकारते हुए महाराणा नकली दुर्ग बनवाने का आदेश देते हैं।

बच्चो ! अब एकांकी को तीसरे दृश्य से समझने का प्रयास करते हैं। इसमें महाराणा लाखा अभयसिंह के साथ चित्तौड़ के निकट एक जंगली प्रदेश पर बनाए नकली दुर्ग का निरीक्षण कर रहे हैं। राजपूत होने के कारण महाराणा लाखा ने प्रतिज्ञा कर ली थी कि रावहेमू से अपने अपमान का बदला लेंगे लेकिन चारणी की राय मानकर वे नकली दुर्ग तैयार करके उस पर युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं। अभयसिंह महाराणा लाखा को सुझाव देते हैं कि इस नकली युद्ध में वास्तविकता लाने के लिए हम नकली बूँदी के दुर्ग के अन्दर अपने ही सैनिक रख देंगे और वे

सैनिक महाराणा तथा उनके सैनिकों पर खाली वार करेंगे। वे महाराणा और सैनिकों की हत्या नहीं करेंगे। कुछ घंटे ऐसा ही खेल होगा फिर मिट्टी का दुर्ग मिट्टी में ही मिला दिया जाएगा। अभय सिंह और महाराणा लाखा का प्रस्थान होता है और वीरसिंह कुछ साथियों के साथ प्रवेश करते हैं।

वीर सिंह मेवाड़ की सेना का एक सिपाही है परन्तु रहने वाला बूँदी का है। उसे अपनी मातृभूमि से असीम लगाव है। जब उसे पता चलता है कि महाराणा लाखा ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए बूँदी का नकली दुर्ग बनवाकर उसे तोड़ने का निश्चय किया है तब उसका स्वाभिमान जाग उठता है। वह इसे अपनी मातृभूमि का अपमान समझता है। वह नकली बूँदी गढ़ की इमारत अपने दो अन्य हाड़ा साथियों को दिखाते हुए कहता है कि मुझे अपनी नकली बूँदी भी प्राणों से अधिक प्रिय है। जिस जगह एक भी हाड़ा है, वहाँ बूँदी का अपमान नहीं किया जा सकता। माना कि हम राणा के नौकर हैं परन्तु जिस जन्मभूमि की धूल में खेलकर हम बड़े हुए हैं, उसका अपमान कैसे सहन किया जा सकता है। जब कभी भी मेवाड़ पर किसी शत्रु ने हमला किया है तब तक हमारी तलवार ने राणा के नमक का बदला दिया है परन्तु जब मेवाड़ और बूँदी के मान का प्रश्न आएगा तो मेवाड़ की दी गई तलवारें महाराणा के चरणों में चुपचाप रखकर विदा लेंगे और बूँदी की ओर से अपने प्राणों की बलि दे देंगे। वीरसिंह अपने साथियों को भी प्रतिज्ञा लेने के लिए कहते हैं कि प्राणों के रहते हम इस नकली दुर्ग पर मेवाड़ की राज्य पताका (झण्डा) को स्थापित न होने देंगे। सभी साथी प्रतिज्ञा लेते हैं और दुर्ग की रक्षा की तैयारी में जुट जाते हैं।

बच्चो! अब एकांकी को यहीं विराम देते हुए मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आपको तीन मिनट दिए जाएँगे। तीन मिनट के अन्तर्गत ही आप पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न

इस प्रकार से हैं :-

प्रश्न 1. कौन-सा खेल होने वाला था ?

प्रश्न 2. वीर सिंह की मातृभूमि कौन-सी थी ? वह मेवाड़ में क्यों रहता था ?

प्रश्न 3. बूँदी के नकली दुर्ग की रक्षा के लिए वीर सिंह ने क्या कहा ?

बच्चो ! प्रश्नों के उत्तर लिखने की अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा करती हूँ कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. बूँदी का नकली दुर्ग बनाकर मेवाड़ नरेश महाराणा लाखा के द्वारा उसे नष्ट करने का खेल होने वाला था।

उत्तर 2. वीर सिंह की मातृभूमि बूँदी थी। वह मेवाड़ में इसलिए रहता था क्योंकि वह महाराणा लाखा की सेना में नौकरी करता था।

उत्तर 3. बूँदी के नकली दुर्ग की रक्षा के लिए वीर सिंह अपने साथियों से कहते हैं कि हम अग्नि कुल के अंगारे हैं। हम अपने वंश की आभा को खत्म नहीं होने देंगे। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम इस नकली दुर्ग पर मेवाड़ का अधिकार नहीं होने देंगे।

बच्चो ! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए चौथे दृश्य को भी समझने का प्रयास करते हैं। इस दृश्य में बूँदी के नकली दुर्ग के द्वार पर महाराणा लाखा और अभयसिंह खड़े हैं। अभयसिंह महाराणा से कहते हैं कि अब आपकी प्रतिज्ञा पूरी होने में कुछ ही क्षण बचे हैं। दोनों ओर से युद्ध आरंभ होता है। मेवाड़ के सैनिक तो बाहर से बनावटी युद्ध करते हैं लेकिन दुर्ग के अन्दर से असली युद्ध होता है। वीर सिंह और उसके हाड़ा साथी सैनिक असली बाण चलाते हैं। सेनापति अभय सिंह ने जब यह देखा

तो सफ़ेद झंडा फहराकर युद्ध को रुकवाया और दुर्ग के अन्दर जाकर वीरसिंह को समझाया परन्तु वीरसिंह पर देशभक्ति का रंग चढ़ा था इसलिए वह नहीं माना। उसके न मानने पर अभयसिंह की ओर से भी असली युद्ध हुआ। वीरसिंह और उसके साथी वीरता के साथ अपनी मातृभूमि की रक्षा करते रहे। जब सूर्यास्त होने को आया और राणा को अपनी जीत की संभावना दिखाई न दी तब उन्होंने अपने सैनिकों से दुर्ग पर गोला फेंक कर वार करने को कहा। इस गोले के प्रहार से वीरसिंह और उसके साथियों के प्राण पखेरू उड़ गए। वीरसिंह ने अपने जीते जी राणा लाखा को नकली दुर्ग पर भी झण्डा नहीं फहराने दिया।

चारणी प्रवेश करती हुई महाराणा लाखा से व्यंग्य करती हुई पूछती है कि महाराणा को वीरसिंह जैसे वीर सैनिक और देशभक्त को मारकर अब तो शांति मिल गई होगी। अब आपने युद्धभूमि छोड़कर डरकर भागने के कलंक का टीका सिर से धो लिया होगा। अब महाराणा लाखा को अपनी गलती का एहसास हो रहा था कि उन्होंने कितनी विवेक-हीन प्रतिज्ञा कर डाली थी। उनकी विजय निर्दोष प्राणों की बलि देकर हुई इसलिए इस विजय को वे अपनी विजय स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। वे अभयसिंह से कहते हैं कि आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है। उन्हें अपने निर्णय पर पश्चाताप होता है इसलिए वे कहते हैं कि न जाने किस बुरे समय में मैंने बूँदी को अपने अधीन करने का निश्चय किया था। ऐसी वीरजाति को अपने अधीन करने की इच्छा रखना मात्र मूर्खता और पागलपन का चिह्न था, जो कभी पूरा न होने वाला था पर अब वीरसिंह की वीरता ने मेरे हृदय के द्वार खोल दिए। महाराणा आत्मग्लानि से भर जाते हैं और वीर सिंह के शव के पास बैठकर अपने अपराध के लिए क्षमा माँगते हैं और कहते हैं कि बूँदी के राव और हाड़ा वंश के राजपूत आज की इस दुर्घटना को नहीं भूल सकते। तभी रावहेमू भी वहाँ प्रवेश करते हैं और लाखा से

कहते हैं कि हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे। वे महाराणा को उनकी गलती का एहसास कराते हुए कहते हैं कि आपको याद रखना चाहिए कि हम राजपूतों में न कोई राजा है, न कोई महाराजा। हम सब तो देश, जाति और वंश की रक्षा करने वाले सिपाही हैं। इसलिए हमारी तलवार स्वजनों पर नहीं उठनी चाहिए। बूँदी के हाड़ा सुख-दुःख में चितौड़ के सिसोदिया के साथ रहे हैं और भविष्य में भी साथ रहेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है। रावहेमू ने राजपूतों की एकता को बनाए रखने के लिए महाराणा लाखा को क्षमा कर दिया। वीर सिंह द्वारा अपनी मातृभूमि के लिए बलिदान देकर आज उनका सिर गर्व से ऊँचा हो गया। अन्त में समस्त राजपूतों का हृदय एक हो गया। वीरसिंह ने हाड़ा और सिसोदिया को अलग होने से बचाकर एकता और सद्भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया। सब वीर सिंह के शव के आगे नतमस्तक हो गए। (पटाक्षेप) अर्थात् परदा गिरता है।

बच्चो! अब हमारी यह एकांकी समाप्त हो चुकी है। आशा है कि आपने इस एकांकी को रुचि से सुना व समझा होगा। आप सभी इस एकांकी को पुनः पढ़ेंगे एवं पूर्णता से समझने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

* निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-
"मैंने सोचा है दुर्ग के भीतर अपने ही कुछ - मिट्टी में मिला दिया जाएगा। अच्छा, अब हम चलें।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता कौन-कौन हैं ? कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न (ii) दुर्ग के भीतर अपने कुछ सैनिक रखने के पीछे वक्ता का क्या आशय था और क्यों ?
प्रश्न (iii) क्या आप महाराणा द्वारा नकली दुर्ग को ध्वस्त करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने को उपयुक्त मानते हैं ? कारण लिखिए।
प्रश्न (iv) 'छूँछे वार' का आशय स्पष्ट कीजिए।

धन्यवाद।